Ancient History
Sub- भारतीय दर्शन
Contribution of Jainism

VI paper
page-①

जैन धर्म की देन :→

जैन धर्म यद्यपि कठोर तपस्या, इन्द्रियों का पूर्ण निग्रह, भौतिक साधनों के परित्याग और अव्यवहारिक अहिंसावादी नीति और रहस्यवादी निषेधात्मक विचारों पर आधारित था। फिर भी इस धर्म और दर्शन ने अपने तात्कालिक समाज, संस्कृति और विचारधारा को प्रभावित किया था।

वर्ण-व्यवस्था → जैन धर्म का सबसे बड़ा प्रभाव तत्कालिक वर्ण-व्यवस्था पर पड़ा। जैन धर्म के कारण ब्राह्मणवादी विचारधारा पर कुठाराघात होने लगी पर चतुर्वर्ण व्यवस्था नाहक सिद्ध होने लगी। प्रत्येक वर्ण के लोगों को जैन धर्म में आने की अनुमति मिलने लगी। वर्ण-विभेद, द्वेष और घृणा समाप्त होने लगी। नारियों से जो धार्मिक अधिकार ब्राह्मणों ने छीना था उसकी प्रतिक्रिया में नारियाँ इस ओर अधिक आकृष्ट हुई। फलतः उन्हें सामाजिक छूट मिली। जिससे वर्णों में खासकर वैश्य और शूद्रों को अधिक राहत महसूस हुई। फलतः जैन धर्म ने सामाजिक तनाव को कम करने का काम किया।

दर्शन के क्षेत्र में स्याद्वाद :→ जैन धर्म की दूसरी देन दर्शन के क्षेत्र में स्याद्वाद था। इस दर्शन से यथार्थवादी दर्शन को विकसित होने का मौका मिला। परन्तु वहीं एकात्मकवाद के सिद्धान्त ने उसके भौतिकवादी सिद्धान्त को रहस्यवादी बना दिया। स्याद्वाद भारतीय दर्शन का आधार-स्तम्भ सिद्धान्त कहा जाता है।

अहिंसावादी सिद्धान्त →

जैन धर्म का महत्वपूर्ण सिद्धान्त अहिंसावादी सिद्धान्त है। जैनियों का अहिंसावादी सिद्धान्त एक सीमा तक लाभप्रद सिद्ध हुआ कि जीवों की हत्या की ओर प्रवृत्ति ही नहीं घटी वरन् मांसाहारी समाज शाकाहारी की ओर उन्मुख हुआ। अतः वैदिक यज्ञ और उसमें पशुबलि की प्रवृत्ति पर ठेस पहुँची।

अहिंसा को जैन दर्शन में परम धर्म माना गया है। अहिंसा को धर्म मानने वाले तो सभी भारतीय दार्शनिक हैं। परन्तु अहिंसा को ही परम धर्म, मानव का लक्ष्य। धर्म, मानव का लक्ष्य

कर्म मानने वाले जैन लोग है तात्पर्य यह है कि-किसी भी प्रकार की अहिंसा को जैन धर्म में पाप माना गया है हिंसा न करना तथा सभी जीवों पर दया रखना इत्यादि अहिंसा का अर्थ तो सर्वत्र समान है। परन्तु सर्वतोभावेन अहिंसा व्रत का पालन करना तो जैन दर्शन की देन है।

भोगवादी प्रवृत्ति पर अंकुश :→

जैनधर्म के कारण भोगवादी प्रवृत्ति पर अंकुश लगा और साथ ही साथ संयम की प्रवृत्ति पर प्रतिबंध लगा। अतः दोनों ने मिलकर संतुलित जीवन को जन्म दिया।

जैनधर्म के अन्तर्गत कामवासना का परित्याग करना ही ब्रह्मचर्य है ब्रह्मचर्य के अग्रलिखित बतलाये गए हैं।

1. दुराचारी स्त्रियों से बचना।
2. अश्लील बातों का त्याग करना।
3. शक्ति से अधिक भोग न करना।
4. अप्राकृतिक मैथुन से बचना, आदि।

संक्षेप में स्त्री से संतोष तथा परायी स्त्री से वियोग दोनों ही ब्रह्मचर्य के अंग हैं।

साहित्य :→

जैनधर्म के कारण संस्कृत भाषा की जगह प्राकृत भाषा में बौद्धों की तरह साहित्य रचे जाने लगा। जैनियों ने अनेक प्रान्तीय भाषा में रचनाएँ की। फलतः आगे चलकर हिन्दी, मराठी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं के विकास में सहायक हुआ। ब्राह्मण धर्म साहित्य की तरह जैनियों ने महाकाव्य, नाटक और कथानक लिखे। व्याकरण, शब्दकोश, छन्दशास्त्र आदि भी लिखे गए। जैनियों के ग्रन्थों में भगवती सूत्र, आगम साहित्य, कल्प साहित्य परिनुतिय का विशेष महत्व है।

इसी तरह जैन-धर्म के कारण कला को भी प्रोत्साहन मिला। उदयगिरि और खण्डगिरि की जैन गुफाएँ, एलोरा के मंदिर, खजुराहो और आबू का जैन मन्दिर और जैनप्रतिमाओं आदि का निर्माण हुआ। खासकर पश्चिम और मध्य एवं पूर्वी भारत में जैनकला का विकास हुआ। ग्वालियर का जैन-

मंदिर और श्रवण बेलगोला में गोमतेश्वर की मूर्ति कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। मध्यकाल में भी अनेक मंदिर और मूर्ति बनाए जाते रहे।

जैन-दर्शन की ऋषभदेव की परम्परा में अनेक देन हैं। उसकी तत्व-मीमांसा का नाम अनेकान्तवाद है। यह विरोधी वादों के समन्वय का सिद्धांत है। एकांकी दृष्टिकोण तो संकीर्णता का परिचायक है। जैन लोग नित्यानित्यात्मक तत्व के स्वरूप को मानकर नित्यवाद तथा शाश्वत अवश्य हैं परन्तु यह दूसरी दृष्टि से अनित्य तथा परिणामी भी है। दोनों दो अन्त हैं, दो किनारे हैं। दोनों नितान्त विरोधी मतों में समन्वय तथा समझौता करना जैन दर्शन की विशेषता है। साथ ही साथ यह जैन धर्म की उदारता तथा दर्शन की विशालता का परिचायक है। किसी दृष्टि से सभी का मत सत्य है।

इस तरह जैन-धर्म और दर्शन सीमित अर्थ और क्षेत्र में ही नहीं भारत के अन्य प्राचीन धर्म और सम्प्रदायों की तरह भारतीय संस्कृति का भी अंग बन गया।

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Deptt of AI&AS
Shershah College Sasaram.